

The Four Noble Truths
(चार आर्य सत्य)

बुद्ध के समय में मानव तबशास्त्र की समस्याओं द्विपर, आत्मा, जगत जैसे विषयों के चिंतन में डूबा था। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने नैतिक कर्तव्य में विमुख हो रहा था। बुद्ध ने द्विपर, आत्मा, आदि विषयों से मानव को दूर ध्यान देना शुरू मानव की नैतिक एवं व्यवहारिक जीवन की समस्याओं के प्रति ध्यान आकृष्ट किया। इसलिए बुद्ध एक समाज सुधारक थे दार्शनिक नहीं। ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त बुद्ध की शिष्याओं का लक्ष्य इनके 'चार आर्य सत्य' में निहित है। इनकी शिष्याएं व्यवहारिक अधिक वैज्ञानिक काम हैं। उन्होंने दार्शनिक प्रश्नों (आत्मा, द्विपर, जगत, स्वतन्त्रता, मरणोत्तर जीवन) से संबंधित प्रश्नों पर ध्यान नहीं देना शुरू किया। इसे 'अव्यक्तानी' कहते हैं। उन्होंने दुःख और दुःख निरोध पर अधिक बल देते हैं। उनके दर्शन का उद्देश्य मानव के दुःखों का अन्त था। उनका यह दुःख और दुःख निरोध पर अधिक बल देता है। बुद्ध के सारे उपदेश चार आर्य सत्य में संनिहित हैं। ये निम्न हैं-

- (1) संसार में दुःख है।
- (2) दुःखों का कारण है।
- (3) दुःखों का निरोध संभव है।
- (4) दुःखों के निरोध का मार्ग है।

प्रथम आर्थ लक्ष्य (संसार में प्राप्त है)

गीतम बुद्ध का प्रथम आर्थ लक्ष्य संसार दुःखमय है, संसार में दुःख ही दुःख व्याप्त है। (वर्त दुःखम्)। बुद्ध का यह निष्कर्ष उनके जीवन के अनुभव पर आधारित है। जीवन में हर पल दुःख है। रोग, बुढ़ापा, मृत्यु, चिन्ता, असन्तोष, नैराश्य, शोक, आदि सांसारिक दुःखों की कुछ शलक है। जन्म में दुःख है, नाश में दुःख है, रोग दुःखमय है, मृत्यु दुःखमय है। अप्रिय से संगोग दुःखमय है, प्रिय से विमोघ दुःखमय है। इस प्रकार से संसार में हर पल दुःख है। ज्ञात है कि गीतम बुद्ध परममग्न, शैव एवं रोग के दुःखों को देखकर घर छोड़ा था। ज्ञान प्राप्ति के उपरांत उनकी यह धारणा और प्रबल हो गयी। उन्होंने यह बातलाया की मानव तथा मानवैतर जीवन, संपूर्ण जगत दुःखमय है, दुःखों से परिपूर्ण है। रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान गौडि स्थिति में पाँच स्ंघ है। संक्षेप में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त संपूर्ण जीवन दुःखपूर्ण है।

कुछ लोगों का मानना है कि संसार में दुःख के साथ साथ सुख का भी अनुभव होता है। अतः संसार में दुःख और सुख का समन्वय है। बुद्ध का कहना है कि संसार में जितने सुख लक्ष्यते हैं वही भी दुःखमय है। सुखालस अवस्थति को प्राप्त करने में दुःख है। किसी वस्तु से सुख का अनुभव भी होता है तो उसे छोड़ जाने का इर बना रहता है। जो जाने का इर करने पर दुःख ही होता है। अतः सांसारिक सुखों को वास्तविक समझना भुर्वतापूर्ण है। सुखों के प्राप्त करने के प्रयास में दुःख इतने नष्ट हो जाने पर दुःख। अतः जितने सुख लक्ष्यता जाता है वह दुःख ही है। बुद्ध ने सांसारिक सुखों को दुःख समझिए रहा है

कि वह क्षणिक और नाशवान है। जो बहुत क्षणिक होती है उसके नष्ट होने पर दुःख होता है। क्षणिक दुःख को दुःख कहना मुश्किल है।

विश्व के क्षणिक दुःख को स्वीकार भी कर ले तो विश्व की अनुभूतियाँ जैसे रोग, मृत्यु, धामनों को चिन्तित एवं दुःखी बना देती है। प्रत्येक व्यक्ति मृत्यु के विचार ले कि "जो एक दिन मरता है" अर्थात् एवं चिन्तित रहता है। मानव को मृत्यु के विचार ले ही दुःख नहीं होता बल्कि अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए भी लक्ष्य करना पड़ता है। जीवन के हर क्षण में दुःख की आदत पकती है। इसलिए बुद्ध ने कहा था कि "दुनियाँ में दुःखियों ने जीतने आंसु बहाये हैं, उनका पानी महासागर में जितना जल है उतना ही अधिक है।" यह कथन विश्व के दुःखों के स्वरूप को पूर्णतः स्पष्ट करता है। अतः विश्व में आनन्द की खोज करना मुश्किल एवं प्रायः असंभव है।

पार्थक्य दर्शन को दोष देकर भारत के अधिकांश पार्थक्य भी संसार को दुःखमय स्वीकार किया है। पार्थक्य दर्शन विश्व को दुःखों से परिपूर्ण माना है, जबकि अन्य भारतीय दर्शन विश्व को दुःखों से परिपूर्ण माना है। पार्थक्य दर्शन (नोपनहावर भी जीवन को दुःखमय माना है। उनका कहना है कि - अज्ञानापाद मनुष्य के दुःखों के प्रति तिर्यक व्यवहार है। सभी अच्छी चीजें निरर्थक हैं संसार सभी दुःखों से भ्रष्ट है।" इस प्रकार ले दोनो पार्थक्यों का दृष्टिकोण जीवन और जगत के प्रति समान है।

बुद्ध के दुःखों पर अत्यधिक जोर देने के कारण कुछ विद्वानों ने बौद्ध धर्म को निराशावादी कहा है। निराशावादी जीवन के विचारों को सिखाता है। निराशावादी के अनुसार जन्म में आशा का कोई स्थान नहीं है। जब हम बौद्ध धर्म की संपूर्णता से दृष्टिगत करते हैं तो बौद्ध धर्म के शुरुआत में निराशावादी नहीं है परन्तु अंत में आशावादी सिद्ध होता है। जहाँ प्रथम आर्य सत्य दुःख की विवेचना करता है तो द्वितीय आर्य सत्य दुःख के कारण को बताता है। वहीं तृतीय आर्य सत्य मानव को दुःख निरोध का आश्वासन देता है। वहीं चतुर्थ आर्य सत्य दुःख निरोध का मार्ग बताता है। इस प्रकार से बुद्ध के चारों आर्य सत्वों की विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि बौद्ध धर्म निराशावादी नहीं बल्कि आशावादी है। बुद्ध का संपूर्ण धर्म दुःख से मुक्त मानव को दुःख से मुक्त करने के लिए है। इस प्रकार निराशावादी बौद्ध धर्म का आरंभ नहीं है।